

Q No 04 आर्थिक विकास पर सार्वजनिक व्यय के प्रभावों का आलोचनात्मक परीक्षण करें ।

(Critically Examine the Effects of Public Expenditure on Economic Development)

सार्वजनिक व्यय (Public Expenditure) आधुनिक अर्थव्यवस्था का एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटक है। प्राचीन समय में सरकार के कार्य सीमित थे, इसलिए सरकारी व्यय भी कम होता था। उस समय सरकार मुख्यतः कानून-व्यवस्था, न्याय और सुरक्षा तक ही सीमित रहती थी। किंतु आधुनिक कल्याणकारी राज्य (Welfare State) की अवधारणा के विकास के साथ सरकार के कार्यों का दायरा बहुत बढ़ गया है। आज सरकार केवल प्रशासन और सुरक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग, आधारभूत संरचना, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक सुरक्षा, रोजगार, गरीबी उन्मूलन तथा आर्थिक विकास जैसे अनेक क्षेत्रों में सक्रिय भूमिका निभाती है। इन सभी कार्यों के लिए सरकार को बड़े पैमाने पर सार्वजनिक व्यय करना पड़ता है।

प्रसिद्ध जर्मन अर्थशास्त्री Adolph Wagner ने अपने वैगनर के सार्वजनिक व्यय के नियम (Wagner's Law) में कहा कि जैसे-जैसे किसी देश का आर्थिक विकास होता है, वैसे-वैसे सरकार के कार्यों का विस्तार होता है और सार्वजनिक व्यय में निरंतर वृद्धि होती है। वहीं John Maynard Keynes ने यह स्पष्ट किया कि आर्थिक मंदी के समय सरकार को सार्वजनिक व्यय बढ़ाकर समग्र मांग (Aggregate Demand) में वृद्धि करनी चाहिए, जिससे उत्पादन, रोजगार और आय में वृद्धि हो सके।

विकासशील देशों, जैसे भारत, में सार्वजनिक व्यय आर्थिक विकास का प्रमुख साधन माना जाता है क्योंकि निजी क्षेत्र अनेक क्षेत्रों में पर्याप्त निवेश नहीं कर पाता। सरकार आधारभूत संरचना, शिक्षा, स्वास्थ्य, सिंचाई, बिजली, परिवहन तथा सामाजिक कल्याण योजनाओं पर व्यय करके आर्थिक विकास को गति प्रदान करती है।

सार्वजनिक व्यय का अर्थ (Meaning of Public Expenditure)

सार्वजनिक व्यय से अभिप्राय सरकार द्वारा जनता के कल्याण, आर्थिक विकास, प्रशासन, रक्षा, सामाजिक सुरक्षा तथा सार्वजनिक सेवाओं के लिए किए गए व्यय से है।

दूसरे शब्दों में,

"सरकार द्वारा अपने विभिन्न प्रशासनिक, सामाजिक, आर्थिक तथा विकासात्मक कार्यों के लिए किया गया व्यय सार्वजनिक व्यय कहलाता है।"

सार्वजनिक व्यय की विशेषताएँ (Characteristics of Public Expenditure)

- यह सरकार द्वारा किया जाता है।
- इसका उद्देश्य केवल लाभ कमाना नहीं बल्कि जनकल्याण करना होता है।
- यह करों, सार्वजनिक ऋण एवं अन्य सरकारी आय से वित्तपोषित होता है।
- इसका उद्देश्य आर्थिक विकास एवं सामाजिक न्याय स्थापित करना होता है।
- यह दीर्घकालीन आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

सार्वजनिक व्यय के उद्देश्य (Objectives of Public Expenditure)

- आर्थिक विकास को बढ़ावा देना।
- राष्ट्रीय आय में वृद्धि करना।
- रोजगार के अवसर उत्पन्न करना।
- गरीबी एवं बेरोजगारी को कम करना।
- सामाजिक एवं आर्थिक असमानताओं को दूर करना।
- शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार करना।
- कृषि एवं औद्योगिक विकास को प्रोत्साहित करना।
- आधारभूत संरचना का विकास करना।
- क्षेत्रीय असमानताओं को कम करना।
- सामाजिक सुरक्षा प्रदान करना।

- मूल्य स्थिरता बनाए रखना।
- पर्यावरण संरक्षण एवं सतत विकास को बढ़ावा देना।

आर्थिक विकास पर सार्वजनिक व्यय के सकारात्मक प्रभाव (Positive Effects of Public Expenditure on Economic Development)

1. आधारभूत संरचना का विकास (Development of Infrastructure)

आर्थिक विकास के लिए सड़क, रेलवे, बंदरगाह, हवाई अड्डे, बिजली, जलापूर्ति, सिंचाई, डिजिटल नेटवर्क तथा संचार व्यवस्था जैसी आधारभूत सुविधाएँ अत्यंत आवश्यक होती हैं। इन क्षेत्रों में सरकार का निवेश उत्पादन लागत को कम करता है तथा निजी निवेश को आकर्षित करता है।

2. मानव पूँजी का विकास (Human Capital Development)

सरकार शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, अनुसंधान एवं कौशल विकास पर व्यय करके मानव संसाधन की गुणवत्ता बढ़ाती है। स्वस्थ एवं शिक्षित जनशक्ति किसी भी राष्ट्र के आर्थिक विकास की सबसे बड़ी शक्ति होती है।

3. रोजगार सृजन (Employment Generation)

सरकार विभिन्न सार्वजनिक निर्माण कार्यों, सड़क निर्माण, सिंचाई परियोजनाओं, उद्योगों, ग्रामीण विकास कार्यक्रमों तथा रोजगार योजनाओं के माध्यम से लाखों लोगों को रोजगार उपलब्ध कराती है।

4. कृषि विकास (Agricultural Development)

कृषि क्षेत्र में सिंचाई, उन्नत बीज, उर्वरक, कृषि अनुसंधान, भंडारण तथा ग्रामीण सड़कों पर सार्वजनिक व्यय कृषि उत्पादन बढ़ाता है तथा किसानों की आय में वृद्धि करता है।

5. औद्योगिक विकास (Industrial Development)

सरकार औद्योगिक क्षेत्रों का विकास, बिजली आपूर्ति, परिवहन, अनुसंधान तथा वित्तीय सहायता प्रदान करके उद्योगों को बढ़ावा देती है। इससे उत्पादन एवं निर्यात में वृद्धि होती है।

6. राष्ट्रीय आय में वृद्धि

सरकारी व्यय से उत्पादन बढ़ता है, रोजगार बढ़ता है और लोगों की आय बढ़ती है। परिणामस्वरूप राष्ट्रीय आय एवं प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होती है।

7. गरीबी उन्मूलन (Poverty Reduction)

सरकार गरीबों के लिए खाद्यान्न, आवास, स्वास्थ्य, शिक्षा, पेंशन, छात्रवृत्ति तथा रोजगार योजनाओं पर व्यय करती है, जिससे गरीबी कम होती है।

8. आय एवं संपत्ति की असमानता में कमी

प्रगतिशील कर प्रणाली तथा सामाजिक कल्याण योजनाओं के माध्यम से सरकार आर्थिक असमानताओं को कम करने का प्रयास करती है।

9. निजी निवेश को प्रोत्साहन (Crowding-in Effect)

जब सरकार आधारभूत संरचना विकसित करती है, तो निजी क्षेत्र को निवेश के लिए अनुकूल वातावरण मिलता है। इससे उद्योगों का विस्तार होता है।

10. संतुलित क्षेत्रीय विकास

सरकार पिछड़े क्षेत्रों में सड़क, बिजली, शिक्षा, अस्पताल तथा उद्योग स्थापित करके क्षेत्रीय असमानताओं को कम करती है।

11. तकनीकी प्रगति एवं नवाचार

अनुसंधान संस्थानों, विश्वविद्यालयों तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पर सार्वजनिक व्यय से नई तकनीकों का विकास होता है।

12. सामाजिक कल्याण

सरकार वृद्धावस्था पेंशन, छात्रवृत्ति, स्वास्थ्य बीमा, महिला एवं बाल विकास तथा सामाजिक सुरक्षा योजनाओं पर व्यय करके समाज के कमजोर वर्गों का जीवन स्तर सुधारती है।

आर्थिक विकास पर सार्वजनिक व्यय के नकारात्मक प्रभाव (Negative Effects)

1. राजकोषीय घाटा (Fiscal Deficit)

यदि सरकार अपनी आय से अधिक व्यय करती है, तो राजकोषीय घाटा बढ़ जाता है। इससे सरकार को अधिक उधार लेना पड़ता है।

2. सार्वजनिक ऋण में वृद्धि

अत्यधिक सार्वजनिक व्यय के कारण सरकार पर ऋण का बोझ बढ़ता है, जिससे भविष्य में ब्याज भुगतान भी बढ़ जाता है।

3. मुद्रास्फीति (Inflation)

यदि सरकारी व्यय उत्पादन की तुलना में अधिक बढ़ जाए, तो बाजार में मुद्रा की मात्रा बढ़ती है और कीमतें बढ़ जाती हैं।

4. निजी निवेश में कमी (Crowding-out Effect)

जब सरकार अधिक उधार लेती है, तो ब्याज दरें बढ़ सकती हैं, जिससे निजी निवेश प्रभावित होता है।

5. भ्रष्टाचार एवं अपव्यय

यदि सरकारी योजनाओं का सही क्रियान्वयन न हो, तो धन का दुरुपयोग तथा भ्रष्टाचार बढ़ सकता है।

6. प्रशासनिक अक्षमता

कई सरकारी परियोजनाएँ समय पर पूरी नहीं होतीं, जिससे लागत बढ़ जाती है और अपेक्षित लाभ नहीं मिल पाता।

7. सरकारी निर्भरता

अत्यधिक सब्सिडी एवं मुफ्त योजनाओं से लोगों में सरकारी सहायता पर निर्भरता बढ़ सकती है।

8. संसाधनों का अनुचित आवंटन

राजनीतिक कारणों से कभी-कभी धन का उपयोग ऐसे क्षेत्रों में किया जाता है जहाँ उसकी वास्तविक आवश्यकता नहीं होती।

सार्वजनिक व्यय का आलोचनात्मक परीक्षण (Critical Examination)

सार्वजनिक व्यय आर्थिक विकास का अत्यंत प्रभावी साधन है, परंतु इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि व्यय उत्पादक, पारदर्शी, उत्तरदायी तथा परिणामोन्मुख है या नहीं।

यदि सार्वजनिक व्यय शिक्षा, स्वास्थ्य, आधारभूत संरचना, अनुसंधान, कृषि तथा उद्योग जैसे उत्पादक क्षेत्रों में किया जाए, तो यह दीर्घकालीन आर्थिक विकास, रोजगार, निवेश तथा सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देता है।

इसके विपरीत यदि सार्वजनिक व्यय अनुत्पादक परियोजनाओं, राजनीतिक लाभ, भ्रष्टाचार या अपव्यय में किया जाए, तो इससे राजकोषीय घाटा, मुद्रास्फीति, सार्वजनिक ऋण तथा आर्थिक अस्थिरता बढ़ सकती है।

इसलिए आर्थिक विकास के लिए केवल सार्वजनिक व्यय की मात्रा बढ़ाना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसकी गुणवत्ता, दक्षता, पारदर्शिता तथा प्रभावशीलता अधिक महत्वपूर्ण है।

- सार्वजनिक व्यय को अधिक प्रभावी बनाने के सुझाव
- शिक्षा एवं स्वास्थ्य पर अधिक निवेश किया जाए।
- आधारभूत संरचना का तीव्र विकास किया जाए।
- भ्रष्टाचार एवं अपव्यय पर कठोर नियंत्रण लगाया जाए।
- परियोजनाओं की नियमित निगरानी एवं सामाजिक लेखा-परीक्षा की जाए।
- सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) को बढ़ावा दिया जाए।
- राजकोषीय अनुशासन बनाए रखा जाए।
- पर्यावरण-अनुकूल एवं सतत विकास परियोजनाओं को प्राथमिकता दी जाए।
- ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में अधिक निवेश किया जाए।

निष्कर्ष (Conclusion)

सार्वजनिक व्यय किसी भी राष्ट्र के आर्थिक विकास का प्रमुख आधार है। यह आधारभूत संरचना के निर्माण, मानव पूँजी के विकास, रोजगार सृजन, कृषि एवं औद्योगिक विकास, गरीबी उन्मूलन तथा सामाजिक न्याय की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। दूसरी ओर, यदि सार्वजनिक व्यय का सही प्रबंधन न किया जाए तो यह राजकोषीय घाटा, सार्वजनिक ऋण, मुद्रास्फीति तथा संसाधनों की बर्बादी जैसी समस्याओं को जन्म दे सकता है।